बिहारी : बिहारी रत्नाकर दोहा संख्या 1-5

डॉ. नवीन नंदवाना
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

बिहारी रत्नाकर- 1

मेरी भव बाधा हरी, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झाँई पर, स्यामु हरित-दुति होइ।।

शब्दार्थ

भवबाधा = सांसारिक कष्ट, नागरि = चतुर।

झाँई = प्रतिबिम्ब पर पड़ने से, हरित = प्रसन्न।

भावार्थ

(1) वे चतुर राधा मेरे सांसारिक कष्टों का निवारण करें, जिनके शरीर का प्रतिबिम्ब पड़ने से भगवान कृष्ण के शरीर की आभा भी निष्प्रभ (हरित दुति) हो जाती है।

(2) वे राधा नागरी मेरे सांसारिक क्लेशों को दूर करें, जिनका ध्यान (झाँई परें) करने मात्र से समस्त प्रकार के दुःख तथा पाप (श्याम रंग प्रतीकार्य में) निष्प्रभ हो जाते हैं।

(3) वे चतुर राधा मेरी सांसारिक बाधाओं को (असफलता के मार्ग से) हटाएँ, जिनके शरीर की परछाई को देखकर ही श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व प्रसन्न (हरित दुति) हो जाता है। (हराभरा होना प्रसन्नता-सूचक मुहावरा है, अतः यहाँ कवि का रंगों के मिश्रण का सूक्ष्म ज्ञान भी स्पष्ट हो जाता है। पीत तथा श्याम रंगों के मिश्रण से हरित रंग का निर्माण होता है। गौर वर्ण पीताभ होता है।)

विशेष

कवि पर राधावल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव पड़ा है अतः राधा की उपासना पर विशेष प्रभाव डाला गया है। साथ ही, बिहारी सतसई के अधिकांश दोहे नायक-नायिका प्रधान हैं अतः कृष्ण तथा राधा- दोनों का ही मंगलाचरण में उल्लेख कर दिया गया है।

प्रस्तुत मंगलाचरण नमस्कारात्मक एवं वस्तुनिर्देशात्मक, दोनों ही प्रकार का है ।

अलंकार - श्लेष, काव्यलिंग, रूपकातिशयोक्ति तथा अनुप्रास अलंकार।

बिहारी रत्नाकर- 2

अपने अंग के जानि के, जोबन नृपति प्रबीन।
स्तन, मन, नैन, नितम्ब, कौं बड़ौ इजाफा कीन।।

शब्दार्थ :-

अंग = अन्तरंग, प्रबीन= चतुर, इजाफा = वृद्धि।

भावार्थ

एक सखी नायक से कहती है कि यौवन रूपी चतुर राजा ने नायिका के शरीर रूपी राज्य पर अधिकार कर अपने अंतरंग पक्ष को जानकर नायिका के युवा होते ही, उसके स्तन, मन, नेत्र तथा नितंबों की स्थिति में पर्याप्त समृद्धि कर दी है। अर्थात् उन्हें बहुत बड़ा कर दिया है।

बिहारी रत्नाकर- 3

अर तं टरत न बर-परें, दई भरक मनु मैन।
होड़ाहोड़ी बढ़ चले चित-चतुराई नैन।।

शब्दार्थ :-

अर= अड़ना, बर परे = बलवान हो गये,

मरक = बढ़ावा।

भावार्थ

दूती नायिका के विषय में नायक से कहती है कि उसके चित्त, चातुर्य और नेत्रों में परस्पर प्रतिद्वन्द्विता चल रही है कि कौन अधिक बढ़ जाए। वे इस प्रतियोगिता में कामदेव से बढ़ावा पाकर और अधिक शक्तिशाली हो गये हैं।

विशेष

यौवन आने पर चित्त, चतुराई और नेत्रों का बढ़ना स्वाभाविक है।

अलंकार - हेतुत्प्रेक्षा तथा मानवीकरण।

बिहारी रत्नाकर- 4

औरे-ओप कनीनिकनु, गनी धनी सिरताज।
मनी धनी के नेह की बनी छनी पट लाज ।। 4।।

शब्दार्थ :-

ओरे ओप = और ही प्रकाश, कनीनिकनु = नेत्रों की पुतली, गनी = मानी गई है, धनी सिरताज = सपत्नियों में श्रेष्ठ, मनी = मणियाँ।

भावार्थ

दूती नायक से नायिका की पुतलियों का वर्णन करते हुए कहती है कि उसकी छवि तो कुछ और ही है, जिसके कारण वह सपत्नियों में श्रेष्ठ मानी जाती है। नेत्रों के भीतर वे पुतलियाँ लज्जा रूपी वस्त्र से ढँकी हुई (पति के प्रति) प्रेम रूपी मणियाँ हैं।

विशेष

कनीनिकाओं को लज्जा रूपी वस्त्र में आच्छन्न कहकर कवि ने उनका सौन्दर्य और अधिक बढ़ा दिया है, जिससे नायक उसकी ओर बरबस ही आकर्षित हो सके।

अलंकार- भेदाकतिश्योक्ति, रूपक।

बिहारी रत्नाकर- 5

सनि काजल चख झख लगन, उपज्यौ सुदिन सनेहु।
क्यौं न नृपति ह्व भोगवै, लहि सुदेसु सबु देहु।।

शब्दार्थ :-

सनि = शनैश्चर नामक ग्रह, चख = चक्षु, झख = मीन, लगन = लग्न, लगी हुई, सुदिन = सुन्दर घड़ी, सुदेसु = सुन्दर देश।

भावार्थ

दूती नायिका से कहती है कि तेरे चक्षु, रूपी मीन लग्न में कज्जल रूपी शनैश्चर नामक ग्रह की स्थिति पड़ जाने से, इस अशुभ अवसर में नायक के प्रति तेरा स्नेह सम्बन्ध स्थापित हो गया है तो तू अब सम्पूर्ण देह रूपी सुन्दर देश पर अधिकार करके राजा के समान उसका उपयोग क्यों नहीं करती है ? (नायिका के कज्जल रंजित नेत्रों को देख नायक मुग्ध हो उठा है।)

विशेष

शनैश्चर नामक ग्रह का रंग ज्योतिष के अनुसार काला है।

यदि किसी व्यक्ति के उत्पन्न होते समय मीन तथा शनि नामक ग्रहों की स्थिति हो तो उसके राजा होने का योग ज्योतिष में कहा गया है ।

साभार :

बिहारी रत्नाकर : जगन्नाथ दास रत्नाकर

बिहारी सतसई : देवेन्द्र शर्मा 'इंद्र'

धन्यवाद !